R.N.I. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2024-26

मूल्य-7 रुपये, वर्ष-24, अङ्क-10 अक्टूबर 2024 1

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट (रजि.), अलीगढ़ (उ०प्र०) का
मासिक मुख समाचार पत्र

मङ्गलायतन

तीर्थधाम चिदायतन

तीर्थधाम चिदायतन
पंचकल्याणक
पूर्व अंक

|| श्री कुंदकुंद आचार्य देव ||

|| पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी ||

ऐतिहासिक अतिशयकारी पौराणिक तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर की पुण्य धरा पर
श्री शांतिनाथ-अकम्पन-कहान-दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हस्तिनापुर द्वारा तीर्थधाम चिदायतन में

श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महा-महोत्सव

(रविवार, 1 दिसम्बर 2024 से शुक्रवार, 6 दिसम्बर 2024 तक)

तीर्थधाम चिदायतन, दूसरी नसियां से आगे, हस्तिनापुर, मेरठ - 250404 (उ.प्र.)
info@chidayatan.com I www.chidayatan.com

तीर्थधाम
चिदायतन

|| श्री कुंदकुंद आचार्य देव ||

|| पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी ||

|| मंगल आमंत्रण ||

ऐतिहासिक, अतिशयभूमि हस्तिनापुर की पुण्य धरा पर
पूज्य गुरुदेवश्री के पुण्य प्रभावना योग में निर्मित
तीर्थधाम चिदायतन में
रविवार 1 दिसंबर से शुक्रवार 6 दिसंबर 2024 तक होने वाले
श्री 1008 शांतिनाथ दिगंबर जिनबिम्ब
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महा-महोत्सव का

आमंत्रण पत्रिका विमोचन व पत्रिका लेखन समारोह

रविवार 13 अक्टूबर 2024, प्रात: 10:00 बजे
से तीर्थधाम मङ्गलायतन में
आपके कर-कमलों से होने जा रहा है.
आप सभी साधर्मी
इस भव्यातिभव्य कार्यक्रम में
सादर आमंत्रित हैं.

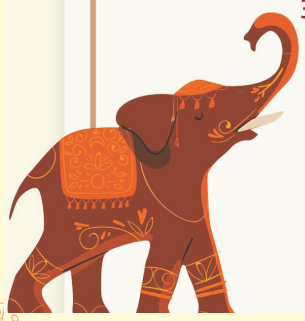

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट (रजि.), अलीगढ़ (उ.प्र.) का

मासिक मुखपत्र

वर्ष-24, अङ्क-10 (वी.नि.सं. 2550; वि.सं. 2081) अक्टूबर 2024

आज नगरी में जन्मे शांतिनाथ,.......

आज नगरी में जन्मे शांतिनाथ, सुन सुन मेरे भैया।
चल भव सागर के तीर - 2 अब मिल गई नैया॥
शांतिनाथ का जन्म हुआ है, घर घर मंगल छाया...
आज नगरी में............

सौधर्म इन्द्र भी आया है, और इन्द्राणी भी आई है... हो ऽ ऽ ऽ ऽ
क्या रूप सलौना देखा, तो अखियाँ हजार बनाई है...
नर नारी सब मंगल गावें-2 हाथ से लेय बलैयां
आज नगरी में जन्मे शांतिनाथ, सुन सुन मेरे भैया...
आज नगरी... ॥1॥

ऐरावत हाथी पर चढ़कर, पाण्डुक शिला ले जायेंगे। हो ऽ ऽ ऽ ऽ
क्षीर सागर के निर्मल जल से, अभिषेक प्रभु का कराएंगे... 2
फूली नहीं समाये मन में-2 आज तो ऐरादेवी मैया...
आज नगरी... ॥2॥

जन्म जगत् में सबका निश्चित मरना होता हो ऽऽऽऽ-2
कल्याणक जिनका होता, कभी न जीना मरना होता-2
भव से पार लगाने वाला, मिला खिवैया...
आज नगरी... ॥3॥

साभार : मंगल भक्ति सुमन

संस्थापक सम्पादक

स्व. पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, अलीगढ़

स्व. श्री पवन जैन, अलीगढ़

सम्पादक

डॉ. जयन्तीलाल जैन, मङ्गलायतन वि०वि०

सह सम्पादक

डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मङ्गलायतन

सम्पादक मण्डल

बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़

डॉ. राकेश जैन शास्त्री, नागपुर

श्रीमती बीना जैन, देहरादून

सम्पादकीय सलाहकार

श्री चिरंजीलाल जैन, भावनगर

श्री प्रवीणचन्द्र पी. वोरा, देवलाली

श्री वसन्तभाई एम. दोशी, मुम्बई

श्री श्रेयस् पी. राजा, नैरोबी

श्री विजेन वी. शाह, लन्दन

मार्गदर्शन

डॉ. किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका

पण्डित अशोक लुहाड़िया, मङ्गलायतन

क्या - कहाँ

	तीर्थंकर भगवन्तों के पंचकल्याणक	5
प्रथमानुयोग	दीक्षावन में वैराग्य भावना	8
द्रव्यानुयोग	समयसार नाटक पर प्रवचन	14
	स्वानुभूतिदर्शन :	19
प्रथमानुयोग	हस्तिनापुर का अतिशयकारी इतिहास	21
करणानुयोग	सात नरकों और सोलह स्वर्गों में आवागमन	23
	श्रुत परम्परा एवं श्रुतज्ञान	26
प्रथमानुयोग	कविवर डड्ढाजी	27
द्रव्यानुयोग	जिस प्रकार-उसी प्रकार	28
	समाचार-दर्शन	29

शुल्क :

एक प्रति : 07.00 ₹

आजीवन (15 वर्ष) : 1000.00 ₹

तीर्थंकर भगवन्तों के पंचकल्याणक

प्रत्येक तीर्थंकर के जीवन में जो पाँच कल्याणकारी, दिव्य, सातिशय और अनुपम घटनाएँ घटती हैं; उन्हें ही 'पंचकल्याणक' कहते हैं। 'पंच' शब्द तो मात्र पाँच संख्या का सूचक है और कल्याणक का अर्थ है—कल्याणकारी मंगलमय महोत्सव। अथवा वैराग्यवर्द्धक, वीतरागता के पोषक, आत्मानुभूति में निमित्तभूत, प्रेरणाप्रद पावन प्रसंग, पंचकल्याणक हैं, जो भव्य जीवों को संसारसागर से पार होने में निमित्त बनते हैं। इनके नाम हैं—गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान एवं मोक्षकल्याणक।

गर्भकल्याणक—सौधर्म इन्द्र, अपने अवधिज्ञान से भगवान के गर्भावतरण को निकट जानकर, कुबेर को भव्य नगरी का निर्माण एवं तीर्थंकर के माता-पिता के घर प्रतिदिन प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल तथा मध्यरात्रि में चार बार साढ़े तीन करोड़ रत्नवृष्टि करने की आज्ञा देता है। रत्नों की वृष्टि, गर्भ में आने के छह माह पूर्व से जन्मपर्यन्त होती है। गर्भावतरण के पूर्व रात्रि के अन्तिम पहर में तीर्थंकर की माँ, आह्लादकारी सोलह स्वप्न देखती हैं। ये स्वप्न, तीर्थंकर के गर्भावतरण के सूचक होते हैं। सौधर्म इन्द्र, देवगणों के साथ आकर उत्सव सम्पन्न कर, जिनमाता की सेवा के लिए देवियों को नियुक्त कर देते हैं। ये देवियाँ, माता की सेवा करते हुए माता का मन धर्म-चर्चा में लगाए रखती हैं।

जन्मकल्याणक—गर्भावधि पूर्ण होने पर माता, तीर्थंकर बालक को जन्म देती है। जन्म होते ही तीनों लोकों में आनन्द छा जाता है। स्वर्ग में इन्द्रों के आसन कम्पायमान हो जाते हैं, घण्टे बजने लगते हैं। इन सब कारणों से इन्द्रों एवं देवों को तीर्थंकर के जन्म का निर्णय होते ही, सौधर्म इन्द्र अपने आसन से उतरकर, सात कदम चलकर, परोक्षरूप में तीर्थंकर को नमस्कार करता है। तदनन्तर सौधर्म इन्द्र, सात प्रकार की सेना के साथ ऐरावत हाथी पर सवार होकर, जन्म नगरी में आता है। सौधर्म इन्द्र की शची इन्द्राणी,

प्रसूतिगृह में प्रवेश कर माता को मायामयी निद्रा से सुलाकर, बालक को उठाकर ले आती है और सौधर्म इन्द्र को सौंप देती है। सौधर्म इन्द्र, बालक के दर्शन कर अत्यन्त भाव विभोर हो जाता है और ऐरावत हाथी पर आरूढ़ होकर बालक को सुमेरुपर्वत पर ले जाकर 1008कलशों से बाल तीर्थंकर का अभिषेक करता है। सौधर्म, बालक के दाहिने पैर के अंगूठे पर जो चिह्न देखता है, उसे घोषित कर, प्रभु का नामकरण करता है।

तपकल्याणक—जन्मकल्याणक के बाद तीर्थंकरों का बाल्यकाल व्यतीत होता है एवं युवा होने पर राज्यपद को स्वीकार करते हैं। किसी वैराग्य का निमित्त पाकर, उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो जाता है। उसी समय ब्रह्मस्वर्ग से लौकान्तिक देव आकर तीर्थंकर के वैराग्य की प्रशंसा करते हुए स्तुति करते हैं। तत्पश्चात् कुबेर द्वारा लायी गयी पालकी में तीर्थंकर बैठते हैं। उस पालकी को मनुष्य एवं विद्याधर राजा, सात-सात कदम तक ले जाते हैं, इसके बाद देवतागण उस पालकी को आकाशमार्ग से दीक्षावन तक ले जाते हैं। वहाँ पर देवों द्वारा रखी हुई चन्द्रकान्तमणि की शिला पर, पद्मासनमुद्रा में पूर्वाभिमुख होकर, सिद्धपरमेष्ठी को नमस्कार कर, पंचमुष्ठी केशलोंच कर, जिन-मुद्रा अंगीकार कर लेते हैं। देवतागुण, तीर्थंकर पुरुष की विशेष पूजा-भक्ति कर, अपने-अपने स्थान को चले जाते हैं।

ज्ञानकल्याणक—दीक्षोपरान्त, तीर्थंकर मुनिराज, मौन धारण कर कठोर तपस्या करते हुए, धर्मध्यान को बढ़ाते हुए, क्षपकश्रेणी पर आरूढ़ होकर मोहनीय का नाश कर, बारहवें गुणस्थान के अन्त में ज्ञानावरण, दर्शनावरण, और अन्तरायकर्म का क्षय करके केवलज्ञान प्राप्त करते हैं। केवलज्ञान उत्पन्न होते ही सौधर्म इन्द्र, अवधिज्ञान से जानकर, सभी देवों के साथ आकर दर्शन पूजन करते हैं। इन्द्र की आज्ञा से कुबेर, समवसरण की रचना करता है। समवसरण में तीर्थंकर प्रभु विराजमान होते हैं। उस समय

देव, मनुष्य, विद्याधर, तिर्यंच आदि सभी प्रभु का उपदेश सुनते हैं।

मोक्षकल्याणक—तीर्थंकर का जब मोक्ष का समय निकट आ जाता है, तब वे समवसरण को छोड़कर, योग-निरोध धारण कर, चौदहवें गुणस्थान में आते ही पाँच ह्रस्व स्वरों (अ, इ, उ, ऋ, लृ) के उच्चारणमात्र काल में चार अघातियाकर्मों का क्षण करके निर्वाण को प्राप्त हो जाते हैं। उसी समय, इन्द्र, देवतागण के साथ निर्वाणभूमि में आते हैं **और तीर्थंकर के शरीर को पालकी में विराजमान करते हैं। अग्निकुमार जाति के देव, अपने मुकुटों से उत्पन्न अग्नि के द्वारा तीर्थंकर के शरीर का अन्तिम संस्कार करते हैं।** पश्चात् उस भस्म को अपने मस्तक पर लगाकर, उन जैसा बनने की भावना करते हैं और विधिपूर्वक पूजन करके इन्द्रगण वापस चले जाते हैं।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का उद्देश्य

साक्षात् तीर्थंकर भगवान के अभाव में उनके द्वारा प्रदर्शित एवं निरूपित मुक्तिमार्ग को निरन्तर आलोकित करते रहने के प्रयोजन से तदाकार वीतरागभाववाही, शान्तरसामृतधारी जिनबिम्बों की स्थापना की जाती है। साथ ही जगत्जनों को अज्ञानी से आत्मज्ञानी; रागी से वीतरागी; अल्पज्ञ से सर्वज्ञ; तथा भक्त से भगवान बनने की तात्त्विक, पारमार्थिक एवं व्यावहारिक विधि का दिग्दर्शन कराना भी एक प्रयोजन है।

जैनदर्शन के अनुसार प्रत्येक प्राणी, पुरुषार्थ द्वारा परमात्मपद प्राप्त कर सकता है। भगवान जन्मते या अवतरित नहीं होते, अपितु आत्मानुभूति के पुरुषार्थ से ही भगवान बन सकते हैं—इसे हृदयंगम कराना भी इस पवित्र अनुष्ठान का उद्देश्य है। यह अनुष्ठान, जगत्जनों का शान्तिपथप्रदर्शक भी है। इन सभी कारणों से हम सब इस महामहोत्सव को अति उल्लासपूर्वक मनाते हैं।

प्रथमानुयोग

आगामी तीर्थधाम चिदायतन के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पावन प्रसंग में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा पंचकल्याणक पर किए गए प्रवचनों का धारावाहिक प्रकाशन किया जा रहा है।

दीक्षाकल्याणक प्रवचन

दीक्षावन में वैराग्य भावना

आज भगवान का दीक्षाकल्याणक महोत्सव है। यहाँ जो तीर्थङ्कर भगवान का दीक्षाकल्याणक होता है, वह तो स्थापनारूप है। पूर्व में हो गये तीर्थङ्कर भगवान को वर्तमान ज्ञान में स्मरण करके स्थापना की जाती है। पूर्व में अनन्त तीर्थङ्कर हो गये हैं, वे तीर्थङ्करदेव, मति-श्रुत-अवधि इन तीन ज्ञानसहित ही जन्मते हैं और कितने ही क्षायिकसम्यग्दर्शनसहित जन्मते हैं। वे माता के गर्भ में आये, तब भी उनको अन्तर में ज्ञानमूर्ति आत्मा का भान है। शरीर-मन-वाणी का एक भी रजकण मेरा नहीं है और जो क्षणिक शुभाशुभविकार होता है, वह किसी पर के कारण नहीं होता, अपितु मेरे पुरुषार्थ की हीनता से होता है। वह शुभाशुभविकार मेरे स्वरूप में से नहीं आता और न वह मेरा स्वरूप है; मैं तो अखण्ड आनन्द का सागर हूँ — ऐसे भानसहित भगवान का आत्मा, स्वर्ग अथवा नरक में से आता है। श्री ऋषभदेव भगवान पूर्व भव में सर्वार्थसिद्धि में देव थे, वहाँ से तीन ज्ञानसहित माता मरुदेवी के गर्भ में पधारे थे।

जैसे, श्रीफल में ऊपर की छाल, काँचली और अन्दर की लालिमा से भीतर का खोपरा भिन्न है; उसी प्रकार आत्मा चैतन्य गोला है, वह इस स्थूल औदारिकशरीररूप छाल से, कार्मणशरीररूप काचली और अन्दर की राग-द्वेषरूप लालिमा—इन तीनों से भिन्न चैतन्य बिम्ब सहजानन्द शान्तरस की मूर्ति है। जैसे, खोपरे के मीठे और सफेद गोले में जो लालिमा है, वह वस्तुतः काचली की ओर का भाग है; उसी प्रकार आत्मा आनन्दस्वरूप

चैतन्य गोला है, उसमें उत्पन्न होनेवाली विकारी वृत्तियाँ पराश्रय से होती हैं; वे वस्तुत: चैतन्यरस की जाति नहीं है—ऐसा भेदज्ञान तो भगवान को मुनि होने के पूर्व ही था। अनन्त तीर्थङ्कर ऐसे भेदज्ञानपूर्वक ही माता के गर्भ में आते हैं। मैं तीर्थङ्कररूप से अवतरित हुआ हूँ—ऐसा विकल्प तथा मुझे तीन ज्ञान है—ऐसा जो भेदभाव, उससे रहित अन्दर में चैतन्यस्वभाव अभेद निर्विकल्प आनन्द का कन्द है—ऐसा भान भगवान को था और इसी के प्रताप से वे तीर्थङ्कर हुए हैं। इस प्रकार हमें भगवान के अन्तर की पहिचान करना चाहिए।

भगवान के माता के गर्भ में आने से छह महीने पूर्व से प्रतिदिन रत्नवर्षा होती थी तथा देव, माता की सेवा करने आते थे। भगवान का आत्मा तो अन्दर से सबके प्रति उदास था, वह तो शरीर को भी अपना नहीं मानता था। वे माता के गर्भ में थे, तब भी—'इस माता के गर्भ में मैं रहा हूँ, ये मेरे माता-पिता हैं, ये इन्द्र मेरी सेवा करते हैं'—ऐसा विकल्प भी रुचिपूर्वक नहीं था। ऐसे भानसहित श्री ऋषभदेव भगवान का जन्म हुआ। 'सिद्ध समान सदा पद मेरो' अर्थात् मैं सिद्ध हूँ, त्रिकाल अखण्ड आनन्दस्वरूप हूँ—ऐसे आत्मभानसहित वे गर्भ में आये थे, ऐसे भानसहित जन्मे और ऐसे भानसहित भव से पार हुए।

एक बार राज्यावस्था में ऋषभदेव भगवान के राजदरबार में देवियाँ भक्ति से नृत्य कर रही थी, इतने में एक देवी की आयु पूर्ण हो गयी। संसार की ऐसी क्षणभङ्गुरता देखकर भगवान के अन्तर में एकदम वैराग्य जागृत हुआ और वे अनित्य, अशरण आदि बारह भावनाओं का चिन्तवन करने लगे।

अहो! आत्मा नित्य वस्तु है और यह शरीर तो संयोगी वस्तु है। माता के गोद में लेने के पूर्व तो यह शरीर, अनित्यता की गोद में आया है। इसे जन्म से पूर्व ही अनित्यता लागू हो गयी है। इसी तरह प्रतिक्षण होनेवाले विकारी परिणाम भी अनित्य हैं, पहले क्षण उत्पन्न होकर दूसरे क्षण नष्ट हो जाते हैं। मेरा चिदानन्द आत्मा ध्रुव है, वह नित्य ऐसा का ऐसा टिक रहा है...

ध्रुवरूप आत्मा ही मुझे शरण है; इसके अतिरिक्त अन्य कोई शरण नहीं है। आत्मा को अपने अतिरिक्त तीर्थङ्कर, गणधर, मुनिवर, इन्द्र अथवा चक्रवर्ती कोई भी शरण नहीं है; एकमात्र अपना ध्रुवस्वभाव ही शरणभूत है। अज्ञानी जीव अपने इस ध्रुवस्वभाव को भूलकर मिथ्यात्व के कारण अनन्त संसार में परिभ्रमण कर रहा है।

संसार में परिभ्रमण करते हुए इस जीव ने पूर्वभव की स्त्री को मातारूप में और पूर्वभव की माता को स्त्री के रूप में अनन्त बार सेवन किया है। जीव, पुण्य करके स्वर्ग में और पाप करके नरक-निगोद में परिभ्रमण करता है — ऐसे संसार को धिक्कार है।

'संसार' कोई अन्य वस्तु नहीं, बल्कि आत्मा का ही विकार है। आत्मा सदा पवित्रमूर्ति है और विकार तथा शरीर 'अशुचिमय' है। मेरा स्वभाव त्रिकाल एकरूप है; अतः मुझे अपने स्वभाव से 'एकत्व' है... मैं एक ज्ञायकभाव हूँ। शरीर और रागादि मेरा स्वरूप नहीं है, उनसे मेरा 'अन्यत्व' है। पुण्य-पाप 'आस्रव' है, वह मेरा स्वरूप नहीं है। स्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान करके उसमें लीन होने पर 'संवर-निर्जरा' प्रगट होते हैं। इस संसार में जीव को रत्नत्रयरूप 'बोधि की प्राप्ति ही अत्यन्त दुर्लभ है।' पूर्व में अनन्त काल में आत्मा को सब मिल चुका है; आत्मा को अनन्त काल में नहीं प्राप्त एक रत्नत्रय ही है—इत्यादि प्रकार से भगवान बारह वैराग्य भावनाओं का चिन्तवन करते थे। तत्पश्चात् लोकान्तिक देव आकर प्रभु की स्तुति करके वैराग्य का अनुमोदन करते हैं और देव, दीक्षाकल्याणक महोत्सव मनाने आते हैं। भगवान दीक्षा लेकर चारित्रदशा अङ्गीकार करते हैं—यह सब दृश्य अभी यहाँ हो गया है।

आत्मा को सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान होने पर भी चारित्रदशा के बिना मुक्ति नहीं होती। चारित्रदशा किसी बाह्य वेष में नहीं, परन्तु आत्मा के सिद्ध जैसे अतीन्द्रिय आनन्द में लीन होने पर तीन कषाय चौकड़ी का नाश होकर छठवें-सातवें गुणस्थान की वीतरागी दशा प्रगट होती है, वह चारित्रदशा है।

ऐसी चारित्रदशा जिनको प्रगट हुई हो, उन्हें ही मुनि कहते हैं। इस चारित्रदशा के बिना सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानरूप धर्म होता है परन्तु मुनिदशा नहीं होती।

भगवान को स्वयं को आत्मा का परिपूर्ण आनन्द दृष्टि में तो आया है—पूर्णानन्दस्वभाव की श्रद्धा और ज्ञान हुआ है; अपने आत्मा में निश्चित हुआ है कि मैं इसी भव से केवलज्ञान लेकर मोक्ष जानेवाला हूँ, तथापि तीर्थङ्कर भगवान को भी चारित्रदशा के बिना केवलज्ञान नहीं होता; इस कारण भगवान को वैराग्य होने पर वे दीक्षा अङ्गीकार करते हैं। 'मैं दीक्षा लेकर मुनि होऊँ'—ऐसा विकल्प तो राग है, वह आत्मा का स्वरूप नहीं है तथा बाह्य में केशलोंच अथवा वस्त्रत्याग की क्रिया जड़ की है, आत्मा उसका कर्ता नहीं है। आत्मा को मुनि होने की वृत्ति उत्पन्न हुई, वह राग है; चारित्रदशा उस राग के कारण नहीं होती परन्तु स्वभाव की लीनता से चारित्रदशा होती है। इसी प्रकार उस राग के कारण वस्त्रत्याग की क्रिया नहीं होती, वह तो जड़ के स्वभाव से होती है।

आत्मा के मुनिदशा प्रगट होने पर वस्त्र का संयोग उसके कारण स्वयं छूट जाता है, वहाँ आत्मा के शुभपरिणाम को निमित्त कहा जाता है परन्तु वस्तुत: तो वस्त्र के पुद्गलों में वर्तमान पर्याय का वैसा ही परिणमन होने की योग्यता थी; आत्मा उसका कर्ता नहीं है तथा जो पञ्च महाव्रत का शुभविकल्प उत्पन्न हुआ, उसे चारित्रदशा का निमित्त कहा जाता है, परन्तु वस्तुत: तो वह राग है, वह वीतरागीचारित्र का कारण नहीं है और परमार्थ से आत्मा उस विकल्प का कर्ता भी नहीं है। आत्मा के अन्तरस्वभाव में स्थिर होने पर वह विकल्प छूट जाता है। 'भगवान ने वस्त्र का त्याग किया' — ऐसा कथन आता है परन्तु वस्तुत: तो स्वरूप में स्थिरता से राग छूट गया और राग छूट जाने से उसके निमित्तरूप वस्त्र स्वयमेव छूट गये हैं।

प्रभुश्री स्वयं दीक्षा अङ्गीकार करके आत्मध्यान में मग्न हुए और तुरन्त ही उनको सातवाँ अप्रमत्त गुणस्थान तथा मन:पर्ययज्ञान प्रगट हुआ। तीन

काल के अनन्त सन्तों का एक ही प्रकार है कि आत्मा के भानपूर्वक पहले तो मुनि होने का विकल्प उत्पन्न होता है परन्तु वे उसका आश्रय नहीं मानते और बाह्य में परिग्रह का सङ्ग नहीं होता। पश्चात् अन्तर चैतन्यस्वभाव में लीन होने पर मुनियों को प्रथम सातवाँ गुणस्थान प्रगट होता है। जिसको मुक्ति होती है, उसको यह दशा आये बिना कभी मुक्ति नहीं होती। गृहस्थपने में सम्यग्दर्शन और एकावतारीपना हो सकता है परन्तु इस दशा के बिना किसी सम्यग्दृष्टि की भी गृहस्थपने से मुक्ति नहीं हो जाती।

कोई जीव, द्रव्यलिङ्गी मुनि होकर यह मानता है कि मैं वस्त्र के त्याग की क्रिया करता हूँ, तो वह जीव मिथ्यादृष्टि है। साधुपद में स्वरूप के भानसहित राग टूटने पर शरीर की निर्ग्रन्थता उसके कारण हो जाती है, उस काल में ऐसा ही उन पुद्गलों के परिवर्तन का काल है; आत्मा का स्वकाल अपने में स्थिरता का है। जहाँ आत्मा के स्वकाल में भाव निर्ग्रन्थता हुई, वहाँ अनन्तानुबन्धी आदि तीन कषाय चौकड़ीरूप कर्म के परमाणुओं का नाश हो जाता है, वह पुद्गल का स्वकाल है और बाह्य में वस्त्रादिक छूटना, वस्त्रादिक के परमाणुओं का स्वकाल है। इस प्रकार प्रत्येक का स्वकाल स्वतन्त्र होने पर भी, जब आत्मा में स्थिरता का स्वकाल होता है, तब कर्म परमाणुओं में तीन कषाय कर्मों का अभाव न हो—ऐसा नहीं होता और वस्त्रादि का वियोग नहीं हो, ऐसा भी नहीं होता—ऐसा ही निर्मल मुनिदशा का और वस्तु का स्वभाव है।

अनादि-अनन्त सन्तों की ऐसी ही दशा है कि अन्तर में एकदम वीतरागता होती है और बाहर में वस्त्र का एक धागा भी नहीं होता। शरीर पर वस्त्र का एक धागा भी रखने का लक्ष्य हो और छठवें-सातवें गुणस्थान की मुनिदशा टिकी रहे—ऐसा तीन काल तीन लोक में नहीं हो सकता। यह मार्ग किसी की कल्पना नहीं है परन्तु आत्मा के भानपूर्वक लंगोटीरहित (नग्न दिगम्बर) मुनिदशा हो—ऐसा सनातन अनादि वस्तुस्वभाव का / पर्याय का धर्म है। इस पर्याय को अन्यथा माननेवाले ने मुनिदशा अथवा वस्तुस्वभाव को नहीं जाना है।

यद्यपि आत्मा, वस्त्र के ग्रहण-त्याग का कर्ता नहीं है; तथापि जब आत्मा में तीन कषाय चौकड़ी के नाशरूप वीतरागी चारित्रदशा प्रगट होती है, तब सहजरूप से राग और वस्त्र का अभाव हुए बिना नहीं रहता—ऐसा ही निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है।

देखो, यह बात अपनी मति-कल्पना से नहीं कही जा रही है; परन्तु भगवान की दिव्यध्वनि में से कही जाती है। बीछिया का अहो भाग्य है कि यहाँ पर पञ्च कल्याणक का महान उत्सव हो रहा है और इसी वन में दीक्षा कल्याणक का उत्सव हो रहा है।

अहो! आज महा वैराग्य का दिन है, परम उदासीनता का प्रसङ्ग है। आज भगवान, वीतरागीचारित्रदशा धारण करते हैं। इस आत्मा को भी ऐसी चारित्रदशा के बिना मुक्ति नहीं होती। यहाँ तो भगवान की दीक्षा की स्थापना है परन्तु इस अवसर पर स्वयं को यह भावना करना चाहिए कि मुझे कब ऐसी परम वीतरागी निर्ग्रन्थदशा आयेगी? कब मैं मुनि होकर आत्मध्यान में लीन होऊँगा? मैं कब इन वीतरागी सन्तों की पंक्ति में बैठूँगा?—ऐसी भावना कौन करता है?—जिसे आत्मा के रागरहित चिदानन्दस्वभाव का भान हो और मुनिदशा के यथार्थ स्वरूप की पहिचान हो, वही ऐसी यथार्थ भावना कर सकता है।

यह मुनिदीक्षा की स्थापना का निक्षेप है। यह निक्षेप कौन कर सकता है? स्थापना तो निमित्त है, पर है, व्यवहार है; उपादान के बिना निमित्त नहीं होता; स्व के भान बिना पर का भान नहीं होता और निश्चय के बिना सच्चा व्यवहार नहीं होता; इसलिए जिसको स्व-उपादान के निश्चयस्वभाव की पहिचान हो, वही पर-निमित्त में स्थापना-निक्षेपरूप व्यवहार को यथार्थ जानता है। मुनिपद तो रागरहित चारित्रदशा है; अतः पहले जिसे रागरहित आत्मस्वभाव की पहिचान हुई हो, वही रागरहित होने का पुरुषार्थ कर सकता है, परन्तु जो राग को ही अपना स्वरूप मानता है, वह जीव, रागरहित होने का पुरुषार्थ किसके बल से करेगा? उसे रागरहित होने की भावना भी यथार्थ नहीं होती। क्रमशः

द्रव्यानुयोग

श्री समयसार नाटक पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के धारावाही प्रवचन

कर्त्ता कर्म क्रिया द्वार प्रवचन

अब 24 वें कलश के 25 वें पद में पण्डित बनारसीदासजी जीव को अकर्त्ता मानकर आत्मध्यान करने की महिमा समझाते हैं।

जीव को अकर्त्ता मानकर आत्म-ध्यान करने की महिमा

जे न करैं नयपच्छ विवाद,
धरैं न विखाद अलीक न भाखैं।
जे उदवेग तजैं घट अंतर,
सीतल भाव निरंतर राखैं॥
जे न गुनी-गुन-भेद विचारत,
आकुलता मनकी सब नाखैं।
ते जगमैं धरि आतम ध्यान,
अखंडित ग्यान-सुधारस चाखैं॥25॥

अर्थः- जो नयवाद के झगड़े से रहित हैं, असत्य, खेद, चिन्ता, आकुलता आदि को हृदय से हटा देते हैं और हमेशा शांतभाव रखते हैं, गुण-गुणी के भेदविकल्प भी नहीं करते, वे संसार में आत्मध्यान धारण करके पूर्ण ज्ञानामृत का स्वाद लेते हैं॥25॥

काव्य - 25 पर प्रवचन

'जे न करे नयपच्छ विवाद'- निश्चय से आत्मा शुद्ध है, आनन्द का सागर है और अबंधस्वरूप है तथा व्यवहार से आत्मा को बंध है, कर्म के सम्बन्ध की अपेक्षा से आत्मा के बंध कहा जाता है- इसप्रकार दोनों नयों द्वारा ज्ञानी वस्तु के स्वरूप को भलीभाँति जानता है और उन दोनों नयों सम्बन्धी विकल्प भी उसको आते हैं कि मैं अबंध हूँ; परन्तु बाह्य में व्यवहार से कर्म का बंध है, इत्यादि परलक्ष्यवाले विकल्प आते हैं; परन्तु विवाद नहीं

होता – झगड़ा उत्पन्न नहीं होता। जैसा सर्वज्ञ ने कहा है, वैसा ही आत्मा को जानते हैं।

'धरैं न विखाद'– ज्ञानी ऐसा खेद नहीं करते कि अरे! मैं तो दु:खी हो गया, मुझे चार गतियों में परिभ्रमण करना पड़ा; अब मेरा क्या होगा ?ऐसा खेद नहीं करते। **'अलीक न भाखे'**– भगवान ने जैसा सत्य स्वरूप कहा है, वैसा स्वयं जानते हैं और वैसा ही अन्य से कहते हैं; झूठ नहीं बोलते हैं।

'जे उदवेग तजै घट अंतर'– हिंसा, झूठ, परिग्रह आदि तो दु:खरूप है; परन्तु व्रत, भक्ति, पूजादि का शुभराग भी दु:खरूप लगता है। धर्मी को तो 'मैं शुद्ध हूँ'– ऐसे विकल्प भी नहीं पोसाते हैं। मैं नरक–निगोद के संयोगिक दु:ख से दु:खी हुआ– ऐसा नहीं; परन्तु धर्मी को वृत्ति का उफान ही दु:खरूप लगता है– इसकारण वह उसको तजता है। सर्वज्ञ परमेश्वर ने कहा मैं वैसा शुद्ध–बुद्ध चैतन्यघन हूँ– ऐसी राग की वृत्ति उत्पन्न होती है, वह भी खेदरूप है– उद्वेगरूप है। इसकारण धर्मी असत्य, खेद, चिन्ता और आकुलता आदि को हृदय से दूर करता है।

बहुत धीरज का कार्य है। जिसको धर्म करना हो, अपना हित करना हो, उसको धीरज से इस मार्ग में आना पड़ेगा। धर्म कोई बाहर से नहीं होता। अनन्तकाल से चारगति में आकुलता के दु:ख भोगे हैं, उस आकुलता को तो छोड़ो, परन्तु वस्तुस्वरूप के दो पक्ष सम्बन्धी विकल्प को भी छोड़े, तब निर्विकल्प अनुभव होता है। वस्तु अबद्ध है और निमित्त की अपेक्षा से बद्ध भी है; परन्तु ऐसे विकल्प से सिद्धि नहीं है। विकल्प तो आकुलता है। मैं शुद्ध हूँ, अबद्ध हूँ, ज्ञायक हूँ–ऐसा मन के निमित्त से विकल्प उत्पन्न होता है वह राग है। इसलिये आकुलता है। जो इस राग को ही अपना कर्तव्य मानता है वहाँ तक शान्ति नहीं होती।

चौरासी के अवतार में भले ही वह स्वर्ग हो या नरक हो, मनुष्य हो या पशु हो; परन्तु ये सब दु:ख की दशायें है। बाहर से अनन्त अनुकूलता हो या अनन्त प्रतिकूलता हो; परन्तु इन सब वस्तुओं पर लक्ष्य जाने से आकुलता ही होती है।

यहाँ तो अन्तर में उतरने की बात करते हैं कि सर्वज्ञ वीतराग द्वारा कथित

नयचक्र के विकल्प भी छोड़ने योग्य हैं। सर्वज्ञ वीतराग कथित वस्तु का अनुभव करने योग्य है।

'शीतल भाव निरंतर राखै'– चैतन्य का अनुभव करनेवाले को निरंतर शीत–शीतल भाव रहते हैं। **'जे न गुनी–गुन भेद विचारत'**–ज्ञान आनन्द आदि गुण और उनका धारक गुणी–आत्मा है– ऐसा विचार भी भेद का विकल्प है।

भाई! मार्ग तो ऐसा है। सर्वप्रथम उसकी समझ करनी चाहिए। अनादि से (जीव) जन्म–मरणादि आकुलता के दु:खों को भोगता आया हैं; परन्तु इसको भान नहीं है।

यहाँ तो वहाँ तक कहते हैं कि वस्तुस्वरूप के विचार, वस्तु के गुण और उनका आधार गुणी, उसके विचार में भी राग है, विकल्प है; इसलिये उसमें भी आकुलता है। तूने अनन्तबार शास्त्र पठन किया; दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा भी अनन्तबार की है; परन्तु तूने कभी अपने शान्त वस्तुस्वरूप (आत्मा) का अनुभव नहीं किया है। उत्पन्न होने वाली राग की वृत्ति उसके समक्ष अग्नि के समान है, शुभराग भी भट्टी है?...हाँ, जिसके पीछे दु:ख है वह भाव भी भयंकर दु:खरूप है। भव का करनेवाला होने के कारण भयंकर भाव है। (आत्मा) अकषाय स्वभाव है, उसमें विकल्प उत्पन्न हों वे अशान्ति हैं, दु:ख है, जहर है। 'मोक्ष अधिकार' (समयसार) में तो शुभभाव को भी विषकुम्भ कहा है।

जिसको आत्मा की शान्ति चाहिए हो, उसको पुण्य की रुचि छोड़नी पड़ेगी। अरे! गुण–गुणी के भेद का विकल्प भी छोड़ना पड़ेगा। जिसने कभी यह बात सुनी ही नहीं हो और पहली ही बार सुने तो उसको यही लगता है कि यह कैसा मार्ग है! वीतराग का मार्ग ऐसा होता है? हाँ, वीतराग का और तेरा मार्ग ऐसा है बापू! वीतरागी को जो वीतरागता प्रकट हुई है वह कहीं बाहर से नहीं आती है; अन्तर में थी वही प्रकट हुई है। उसीप्रकार तेरा स्वरूप भी शांत..शांत...वीतराग स्वरूप है, अनाकुल आनन्द का धाम है, शीतलता की शिला है। बरफ की शिला तो रूपी और जड़ है, जबकि आत्मा तो अरूपी और चैतन्यमय शान्तरस की शिला है।

परन्तु अरे ! इसको इस राग रहित साक्षात विद्यमान तत्त्व का विश्वास नहीं है। जिससे सिद्धपद प्राप्त होता है और अनन्तकाल रहता है- अनन्त दु:ख का अभाव होता है- ऐसी वस्तु और उसकी प्राप्ति का मार्ग तो कोई अलौकिक ही होगा न भाई ! जिसको इस मार्ग की बात सुनने को भी नहीं मिले वह निर्णय और रुचि कैसे कर सकेगा ? बापू ! त्रिलोकनाथ परमात्मा तेरी आत्म शान्ति को याद करने और अशान्ति को भूलने के लिए कहते हैं।

बाहर से विशाल गजरथ निकाले, 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' यह सब गायें, दस-बीस हजार लोग इकट्ठे हुए हों... यह कोई धर्म नहीं है। अन्दर में आत्मा का झंडा हमेशा ऊँचा रहे, इसका नाम धर्म है। बाहर की क्रिया तो तेरी नहीं, परन्तु जो विकल्प उत्पन्न होता है, वह भी तू नहीं है। बापू ! तुझे अपनी हयाती-अस्तित्व-सत्ता का पता ही नहीं है। दया, दानादि के विकल्प उत्पन्न होते हैं, वे तो रागचिंगारिया हैं, वे आत्मा नहीं हैं। समवसरण के मध्य में, लाखों-करोड़ो देवों की उपस्थिति में, अर्द्धलोक के स्वामी ऐसे इन्द्र की उपस्थिति में भगवान ऐसा कहते थे और वर्तमान में भी सीमंधरादि तीर्थंकर कह रहे हैं कि रागादिभाव तू नहीं है, तू उनका स्वामी नहीं है, तू है वहाँ रागादि नहीं हैं और रागादि है वहाँ तू नहीं है।

भगवान आत्मा को 'भगवान' कहकर सम्बोधते हैं कि तू अपनी महिमावंत वस्तु का विश्वास ला ! जिसने अपनी आत्मा का अनुभव किया है-ऐसे धर्मी हमेशा शीतलभावपने रहते हैं। मैं गुणी हूँ और मेरे में अनन्त गुण है-ऐसा विकल्प भी धर्मी नहीं करते हैं। कारण कि गुण और गुणी के भेद को लक्ष्य में लेने से भी राग की चिंगारिया उत्पन्न होती है। भाई ! तू तो शीतल स्वभावी भगवान है।

रोटी बनने में बाई निमित्त होती है, घड़ा बनने में कुम्हार, कपड़े सिलने में टेलर, कपड़ा बनाने में जुलाहा-बुनकर निमित्त होते हैं। ऐसे एक ही समय में होते निमित्त-नैमित्तिक के विकल्प तो दूर रहे; परन्तु यहाँ तो मैं अपरिमित्त आनन्द स्वभावी हूँ- ऐसा गुण-गुणी भेद का विकल्प उत्पन्न होता है उसको भी राग की चिंगारी है- ऐसा कहते हैं। गुणी में गुण रहते है; परन्तु राग की

चिंगारी गुणी में नहीं है। साधारण जीवों को यह बात कठिन लगती है। श्रीमद् कहते हैं न–

'वचनामृत वीतराग के, परम शान्तरस मूल।
औषध जो भवरोग के कायर को प्रतिकूल॥

वीतराग की वाणी विकल्प को भी छुड़ाकर शान्तरस में डालनेवाली है। यही भवरोग की औषधि भी है। जीव को अनादि से भ्रम का रोग लगा हुआ है, उसको वीतराग की वाणी के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं मिटा सकता। छह महीने तक 99 डिग्री बुखार रह जावे तो तुरंत शंका होती हैं कि इसे तो टी.वी हुआ लगता है तो उसे टी.वी अस्पताल में दवा कराने आना पड़ता है न! तब तुझको यह भ्रम रोग तो अनादि से लगा हुआ है, यदि इसे मिटाना हो तो यह वीतराग की वाणी सुन!

'आत्मभ्रान्ति सम रोग नहिं, सद्गुरु वैद्य सुजान ।
गुरु आज्ञा सम पथ्य नहिं, औषध विचार–ध्यान॥

आत्मा स्वयं अपने को नहीं पहिचानता और पुण्य–पाप भाव 'वह मैं' और शरीर 'मेरा'– ऐसी भ्रान्ति में पड़ा है, इसके समान अन्य कोई महान रोग नहीं है। इस सुन्दर दिखनेवाले शरीर में 5,68,99,584 (पांच करोड़, अड़सठ लाख, निन्यानवैं हजार, पांच सौ चौरासी) रोग भरे है– ऐसा भगवान कहते हैं। आत्मभ्रान्ति का रोग तो इससे भी कोई अलग और महान है।

श्रोता:– शरीर के रोग तो शक्तिरूप पड़े होंगे न ?

पूज्य गुरुदेवश्री:– कितने ही तो व्यक्तरूप भी होते हैं; परन्तु दिखते नहीं है। एक रोम जितने भाग में 96–96 रोग होते हैं। शरीर रोग की मूर्ति है और आत्मा अनन्त गुणों की निरोगता वाला है। लोगस्स में आरोग्यबोधि लाभ की बात आती है न! इस आरोग्य का अर्थ यह है कि– हे परमात्मा! यह शुभाशुभराग रोग है और उन्हें अपना मानना यह भ्रान्ति का महारोग है, उससे रहित मेरा स्वरूप निरोग है। वह निरोगता प्रगट करना मेरा आरोग्य है और उसकी श्रद्धा–ज्ञान और स्थिरता करना बोधि है। इस आरोग्य तथा बोधि का लाभ होने में मेरा लाभ है। **क्रमशः**

स्वानुभूतिदर्शन : बहिनश्री की तत्त्वचर्चा

प्रश्न :- विशेष शास्त्राभ्यास न हो, तथापि आत्मा की प्राप्ति हो सकती है ?

समाधान :- शिवभूति मुनि को गुरु ने 'मातुष-मारुष' ऐसा कहा, परन्तु इतना भी वे भूल गये और 'तुष-माष' (याद) रह गया! वहाँ एक स्त्री दाल धो रही थी; वह छिलके (तुष) और दाल (माष) देखकर उन्हें लगा कि छिलके जुदे हैं और दाल जुदी है। उस पर से याद आया कि मेरे गुरु ने ऐसा कहा है कि 'आत्मा जुदा है और शरीर, विभाव-राग-द्वेषादि जुदे हैं';—इस प्रकार मेरा स्वभाव निराला है, ऐसा प्रयोजनभूत ग्रहण कर लिया और अन्तर में उतर गये; इसलिए अधिक शास्त्राभ्यास की आवश्यकता नहीं है; परन्तु अन्तर की लगन, अन्तर का पुरुषार्थ एवं रुचि की आवश्यकता है—वह यथार्थ समझे तो हो सकती है और आत्मा का अस्तित्व ग्रहण करे तो हो सकती है। अन्तरस्वरूप समझना जरूरी है—आत्मा दूसरे से भिन्न है, वह ज्ञायक है, आनन्द से भरपूर है, महिमावन्त है, वह कोई निराला ही तत्त्व है ऐसा अन्तर से समझे तो हो सकती है। जिनेन्द्रदेव ने पूर्णता की प्राप्ति कैसे की, गुरु किस प्रकार साधना कर रहे हैं, शास्त्र में कैसी बातें आती हैं, समझानेवाले गुरु क्या कर रहे हैं, क्या मार्ग बतला रहे हैं, वह स्वयं ग्रहण करे। प्रयोजनभूत—मूलभूत बात ग्रहण करे तो प्राप्ति हो सकती है। विशेष शास्त्राभ्यास करे तथी प्राप्ति हो ऐसा नहीं है; दिन-रात लगन लगनी चाहिए। बाहर की रुचि या रस हो तो यह न होवे, परन्तु आत्मा का रस लगना चाहिए। यह सब जो बाहरी है वह अन्तर में नीरस लगे, अर्थात् अन्तर में से उसका रस सब छूट जाये, उसकी महिमा छूट जाये, तो आत्मप्राप्ति हो। एक आत्मा का रस लगे, दूसरी सब महिमा छूट जाये, तथा अन्तर से ऐसा लगे कि यह संसार महिमावन्त नहीं है, महिमावन्त मेरा आत्मा ही है, तब (प्राप्त) हो। मूल प्रयोजनभूत आत्मस्वभाव को पहिचाने अर्थात् मेरे द्रव्य-गुण-पर्याय क्या हैं—ऐसे मूल प्रयोजनभूत स्वरूप को समझे तो आत्मप्राप्ति

हो। उसके पुरुषार्थ में कमी है, परन्तु अन्तर से सच्ची लगन लगे तो बारम्बार पुरुषार्थ करे, बारम्बार पुरुषार्थ हो। यथार्थ रुचि हो तो बारम्बार पुरुषार्थ हुआ ही करे। यदि रुचि मन्द पड़े तो बारम्बार पुरुषार्थ करके उग्र करे। लगन अन्तर से लगनी चाहिए। अन्तर से आत्मा की लगन लगे उसे कहीं चैन नहीं पड़ता।

मुमुक्षु :- लगन तो खूब लगी है किन्तु पुरुषार्थ नहीं उपड़ता ?

बहिनश्री :- लगन लगे और पुरुषार्थ न उपड़े ऐसा बनता ही नहीं; और पुरुषार्थ न उपड़े तो लगन ही नहीं लगी है। भीतर से प्यास लगी हो तो वह पानी ढूँढ़ने का प्रयत्न किये बिना रहता ही नहीं; परन्तु भीतर प्यास ही नहीं लगी है। लगन लगे तो पुरुषार्थ होवे ही और तब मार्ग मिले बिना नहीं रहता। गुरुदेव ने अत्यन्त स्पष्टतापूर्वक विधि बतलाई है, परन्तु स्वयं को भीतर से लगे तो विधि ढूँढ़े न ? सचमुच लगन लगी ही नहीं है। विधि एक ही है कि आत्मा को पहिचानना, आत्मा का अस्तित्व ग्रहण करना। आत्मा कौन है ? आत्मा शाश्वत है वह किस प्रकार है ?—आदि विचार करके निर्णय करे तथा एकत्वबुद्धि तोड़ने का प्रयत्न करे। परमार्थ पंथ एक ही है, परन्तु वह स्वयं करता नहीं है। **क्रमशः**

षट्खण्डागम ग्रन्थ की वाचना अनवरत प्रवाहित
16वीं पुस्तक की वाचना

विद्वत् समागम - आदरणीया बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन, जयपुर

दोपहर	01.30 से 03.15 तक (प्रतिदिन)	**षट्खण्डागम (धवलाजी)**
रात्रि	07.30 से 08.30 बजे तक	भगवती आराधना ग्रन्थ का स्वाध्याय
	08.30 से 09.15 बजे तक	**समयसार ग्रन्थाधिराज के कलशों का व्याकरण के नियमानुसार शुद्ध उच्च्चारण सहित सामान्यार्थ**

नोट—इस कार्यक्रम में आप ZOOM ID-9121984198,

- Password - tm@4321 youtube channel - teerthdhammangalayatan

के माध्यम से भी शामिल हो सकते हैं।

प्रथमानुयोग

....गतांक से आगे

तीर्थधाम चिदायतन

हस्तिनापुर का अतिशयकारी इतिहास

धार्मिक नगरी हस्तिनापुर का वर्णन उत्तरपुराण से

ऐसा कहकर वह कामधेनु को जबरदस्ती लेकर जाने लगा, तब जमदग्नि ऋषि रोकने के लिए उसके सामने खड़े हो गये। कुमार्गगामी राजा कृतवीर जमदग्नि को मारकर तथा अपना मार्ग उल्लंघकर नगर की ओर चला गया। इधर कृशोदरी रेणुकी पति की मृत्यु से रोने लगी। तदनन्तर उसके दोनों पुत्र जब फूल, कन्द, मूल तथा फल आदि लेकर वन से लौटे तो यह सब देखकर आश्चर्य से पूछने लगे कि यह क्या है ?

सब बात को ठीक-ठीक समझकर उन्हें क्रोध आ गया। स्वाभाविक पराक्रम को धारण करनेवाले दोनों भाईयों ने पहले तो शोक से भरी हुई माता को युक्तिपूर्ण वचनों से सन्तुष्ट किया फिर तीक्ष्ण फरशा को ध्वजा बनानेवाले, यमतुल्य दोनों भाइयों ने परस्पर कहा कि गाय के ग्रहण में यदि मरण भी हो जाये तो वह पुण्य का कारण है, ऐसा शास्त्रों में सुना जाता है अथवा यह बात रहने दो, पिता के मरण को कौन सह लेगा ? ऐसा कहकर दोनों ही भाई चल पड़े। स्नेह से भरे हुए समस्त मुनिकुमार उनके साथ गये।

राजा सहस्त्रबाहु और कृतवीर जिस मार्ग से गये थे, उसी मार्ग पर चलकर वे अयोध्यानगर के समीप पहुँच गये। वहाँ कृतवीर के साथ संग्रामकर उन्होंने राजा सहस्त्रबाहु को मार डाला और सायंकाल के समय नगर में प्रवेश किया सो ठीक ही है क्योंकि जो अकार्य में प्रवृत्ति करते हैं, उनके लिए हलाहल विष के समान भयंकर पापों के परिपाक असह्य दु:खों की परम्परा रूप फल शीघ्र ही प्रदान करते हैं। इधर रानी चित्रमती के बड़े भाई शाण्डिल्य नामक तापस को इस बात का पता चला कि परशुराम, सहस्त्रबाहु की समस्त संतान को नष्ट करने के लिए उत्सुक है और रानी चित्रमती, निदानरूपी विष से दूषित तप के कारण महाशुक्र स्वर्ग में उत्पन्न

हुए राजा भूपाल के जीव स्वरूप देव के द्वारा गर्भवती हुई है अर्थात् उक्त देव रानी चित्रमती के गर्भ में आया है। ज्यों ही शाण्डिल्य को इस बात का पता चला त्यों ही वह बहिन चित्रमती को लेकर अज्ञात रूप से चल पड़ा और सुबन्धु नामक निर्ग्रन्थ मुनि के पास जाकर उसने सब समाचार कह सुनाये। 'हे आर्य! मेरे मठ में कोई नहीं है इसलिए मैं वहाँ जाकर वापिस आऊँगा। जब तक मैं वापिस आऊँ तब तक यह देवी यहाँ रहेगी' यह कहकर वह चित्रमती को सुबन्धु मुनि के पास छोड़कर अन्यत्र चला गया।

इधर रानी चित्रमती ने पुत्र उत्पन्न किया। यह बालक भरतक्षेत्र का भावी चक्रवर्ती है, यह विचारकर वन-देवताओं ने उसे शीघ्र ही उठा लिया। इस प्रकार वन-देवियाँ जिसकी रक्षा करती हैं, ऐसा वह बालक धीरे-धीरे बढ़ने लगा।

जब कुछ दिन व्यतीत हो गये, तब एक दिन रानी ने मुनि से पूछा कि हे स्वामिन्! यह बालक पृथिवी का आश्लेषण करता हुआ उत्पन्न हुआ था, अतः अनुग्रह करके इसके शुभ-अशुभ का निरूपण कीजिये। इस प्रकार रानी के कहने पर मुनि कहने लगे कि हे अम्ब! यह बालक सोलहवें वर्ष में अवश्य ही चक्रवर्ती होगा और चक्रवर्ती होने का यह चिह्न होगा कि यह बालक अग्नि से जलते हुए चूल्हे के ऊपर रखी कढ़ाई के घी के मध्य में स्थित गरम-गरम पुओं को निकालकर खा लेगा। इसलिए तू किसी प्रकार का भय मत कर। इस प्रकार दया से परिपूर्ण सुबन्धु मुनि ने दुःखी रानी चित्रमती को अत्यन्त सुखी किया।

तदनन्तर बड़ा भाई शाण्डिल्य नाम का तापस आकर उस चित्रमती को अपने घर ले गया। यह बालक पृथिवी को छूकर उत्पन्न हुआ था इसलिए शाण्डिल्य ने बड़ा भारी उत्सव कर प्रेम के साथ उसका सुभौम नाम रखा। वहाँ पर वह उपदेश के अनुसार निरन्तर प्रयोग सहित समस्त शास्त्रों का अभ्यास करता हुआ गुप्तरूप से बढ़ने लगा। **क्रमशः**

करणानुयोग

सात नरकों और सोलह स्वर्गों में आवागमन

सातवें नरक से निकलकर जीव क्रूर पंचेन्द्रिय पशु होता है, मनुष्य नहीं होता है।

छठे नरक से निकलकर जीव मनुष्य तो हो जाता है, परन्तु महाव्रत धारण नहीं कर सकता है।

पाँचवें से निकलकर मनुष्य होता है और महाव्रत भी धारण कर सकता है; परन्तु समस्त कर्मों का क्षय करके मुक्त नहीं हो सकता है।

चौथे नरक से निकलकर मनुष्य होकर महाव्रत धारण करके मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है; पर तीर्थंकर नहीं हो सकता है।

तीसरे, दूसरे और पहिले नरक से निकलर अचिंत्य विभूति का धारक तीर्थंकर भी हो सकता है।

भवनत्रिक देव (भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी) और सौधर्म, ईशान स्वर्गों के देव मरकर एकेन्द्रिय पर्याय में जन्म ले सकते हैं, परन्तु एकेन्द्रिय में अग्निकाय, वायुकाय के जीव नहीं हो सकते हैं, बादर पृथ्वीकाय, जलकाय, वनस्पतिकाय हो सकते हैं।

तीसरे सनत्कुमार स्वर्ग से बारहवें सहस्रार स्वर्ग तक के देव पंचेन्द्रिय पशु हो सकते हैं, एकेन्द्रियादि नहीं हो सकते।

बारहवें स्वर्ग से ऊपर के देव एक मनुष्य शरीर में ही अवतार लेते हैं, अन्य गतियों में नहीं जाते हैं।

स्वर्गों में आठ युगल हैं और उनमें बारह इन्द्र हैं, इन बारह इन्द्रों में छह उत्तर के हैं और छह दक्षिण के हैं। दक्षिण के छह इन्द्र, सौधर्म की इन्द्राणी, सौधर्म स्वर्ग के चारों लोकपाल (सोम, यम, वरुण, कुबेर) लौकान्तिक देव और सर्वार्थसिद्धि स्वर्ग के सब अहमिन्द्र—ये सब शीघ्र ही मोक्ष को प्राप्त होनेवाले एक भवावतारी जीव हैं; केवल एक ही भव धारण करके मुक्त हो

जाते हैं अर्थात् एक भव मनुष्य गति में लेकर मोक्ष अवस्था को प्राप्त होते हैं।

कर्म व नोकर्म में अन्तर

आत्मा के के योग परिणामों के द्वारा जो किया जाता है, उसे कर्म कहते हैं। यह आत्मा को परतन्त्र बनाने का मूल कारण है। कर्म के उदय से होनेवाला यह औदारिक शरीर आदिरूप पुद्गल परिणाम जो आत्मा के सुख-दुःख में सहायक होता है, नोकर्म कहलाता है। स्थिति के भेद से भी कर्म और नोकर्म में अन्तर है।

कर्म जगत् का सृष्टा है

विधि, सृष्टा, विधाता, देव, पुराकृत, कर्म तथा ईश्वर ये सब कर्मरूपी ईश्वर के पर्याय वाचक शब्द हैं अर्थात् इनके सिवाय अन्य कोई लोक का बनानेवाला नहीं। **यह लोक अनादि से है और अनन्त काल तक विद्यमान रहेगा।**

कायक्लेश व परीषह में अन्तर

कर्म के निमित्त से प्राप्त हुआ दुःख परीषह और स्वयं किया गया दुःख कायक्लेश है। यही दोनों में अन्तर है।

हुंडावसर्पिणी-काल की विशेषताएँ

असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल की शलाकाओं के बीत जाने पर प्रसिद्ध एक हुण्डावसर्पिण आता है; उसके चिह्न ये हैं —

1. इस हुण्डावसर्पिणी काल के भीतर सुषमा-दुषमा काल की स्थिति में से कुछ काल के अवशिष्ट रहने पर भी वर्षा आदि पड़ने लगती है और विकलेन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति होने लगती है।

2. इसके अतिरिक्त इसी काल में कल्पवृक्षों का अन्त और कर्मभूमि का व्यापार प्रारम्भ हो जाता है।

3. इस काल में प्रथम तीर्थंकर और प्रथम चक्रवर्ती भी उत्पन्न हो जाते हैं।

4. चक्रवर्ती का मान भंग हो जाता है।

5. थोड़े जीवों का मोक्षगमन भी हो जाता है।

6. इसके अतिरिक्त चक्रवर्ती से की गई द्विजो के वंश की उत्पत्ति भी होती है।

7. इस दुषमा-सुषमा काल में 59 ही शलाका पुरुष हुए।

8. नौवें (पन्द्रहवें की बजाय) से सोलहवें तीर्थंकर तक सात तीर्थों में धर्म की व्युच्छिति हुई।

9. ग्यारह रुद्र और कलहप्रिय नौ नारद होते हैं।

10. सातवें, तेइसवें तथा अन्तिम चौबीसवें तीर्थंकर के उपसर्ग हुआ।

11. तृतीय, चतुर्थ व पंचम काल में उत्तम धर्म को नष्ट करनेवाले विविध प्रकार के दुष्ट पापिष्ठ कुदेव और कुलिंगी भी दिखने लगते हैं।

12. चाण्डाल, शबर, पाण (श्वपच), पुलिंद, लाहल, किरात इत्यादि जातियाँ उत्पन्न हुई।

13. दुषमा नामक पंचम काल में 21 कल्की व 21 उपकल्की होते हैं।

14. तीर्थंकर को गृहस्थ दशा में कन्यायें भी उत्पन्न हुई हैं।

15. अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूवृद्धि और वज्राग्नि आदि का गिरना, इत्यादि विचित्र भेदों को लिये हुए नाना प्रकार के दोष इस हुण्डावसर्विणी काल में होते हैं।

चतुर्थ काल की कुछ विशेषताएँ

इस काल में तीर्थंकर, सकल चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव और इनके प्रतिशत्रु उत्पन्न होते हैं। रुद्र, कामदेव, गणधरदेव, और जो चरम शरीरी मनुष्य हैं, उनकी उत्पत्ति दुषमा-सुषमा काल में मानी गई है। **क्रमशः**

वैराग्य समाचार

दिल्ली : श्री कान्तिप्रसाद जैन, शाहदरा का आकस्मिक देहपरिवर्तन हो गया है। आप पण्डित श्री कैलाशचन्द्र जैन के शिष्य व दामाद थे। आप धार्मिक रुचिवन्त जीव थे। तीर्थधाम मंगलायतन के प्रति आपको बहुत वात्सल्य था। तीर्थधाम मङ्गलायतन परिवार दिवंगत आत्मा के सुगतिगमन, बोधिलाभ एवं शीघ्र मुक्ति प्राप्ति की भावना भाता है।

करणानुयोग

श्रुत परम्परा एवं श्रुतज्ञान का स्वरूप

छह द्रव्य, सात तत्त्व, नौ पदार्थ, मोक्षमार्ग; सच्चे देव, शास्त्र, गुरु का स्वरूप; स्व और पर का ज्ञान, हेय-ज्ञेय-उपादेय भाव इत्यादि संबंधी सच्चे उपदेश देने वाले आचार्यादिकों का अर्थात् तीर्थंकर, आचार्य, उपाध्याय, साधु, पंचम या चतुर्थ गुणस्थानवर्ती ज्ञानी जीवों का समागम मिलना; उनके द्वारा दिए गए उपदेश का अर्थात् देशना का मिलना और उपदेशित पदार्थों का ज्ञान में धारण होना, देशनालब्धि है।

उपदेश को देशना कहते हैं और उस उपदेश को सुनकर, समझना, याद रखना उसे पुनः पुनः विचारों में लेना देशनालब्धि है। श्रवण, ग्रहण, धारण आदि इसके अंग हैं। मात्र उपदेश सुनने की क्रिया देशनालब्धि नहीं है। देशनालब्धि वाला जीव तो अपने स्वरूप संबंधी उपदेश अत्यंत रुचिपूर्वक सुनता है, जिसकी देशनालब्धि की योग्यता होती है, भवितव्य होता है, उसे ज्ञानी आचार्य का सत्समागम और उपदेश की प्राप्ति भी सहज होती है। उस जीव की तीव्र रुचि ही उसमें कारणभूत होती है।

देशना के मूल स्रोत अरहंत भगवान हैं। उनके उपदेशानुसार रचित शास्त्र और उनका उपदेश बताने वाले गुरु भी देशना के स्रोत हैं, देशना देने वाले हैं। वे तो मात्र मोक्षमार्ग का ही उपदेश देते हैं। चौथे, पाँचवें गुणस्थान वाले जीव अभी गृहस्थावस्था में हैं। शास्त्र स्वाध्याय करते समय वे भी मात्र मोक्षमार्ग का ही उपदेश देंगे, आत्मस्वरूप का कथन करेंगे, आगम के अनेक सिद्धांत समझायेंगे।

देव-शास्त्र-गुरु का स्वरूप, हेय-ज्ञेय-उपादेय तत्त्वों का स्वरूप आदि का विस्तार से वर्णन करेंगे, समझायेंगे, परन्तु गृहस्थोचित अन्य कार्यों में अपने कुटुंबीजनों, साधर्मियों तथा समाज के अन्य लोगों को जरूरत पड़ने पर लौकिक उपदेश भी देंगे। उनके शास्त्र विषयक उपदेश को तो देशना कहेंगे, परन्तु लौकिक उपदेश को देशना कहना योग्य नहीं है।

..... शेष पृष्ठ 27 पर

प्रथमानुयोग

कवि परिचय

कविवर डड्ढा जी

आप संस्कृत के अच्छे विद्वान थे। आपका निवास स्थान चित्तौड़ था। आपके पिता का नाम श्रीपाल था। ये पोरवाल जाति के थे। आपकी एक मात्र कृति संस्कृत 'पंचसंग्रह' है। कवि डड्ढा अमृतचन्द्रसूरि के बाद तथा आचार्य अमितगति के पूर्व के विद्वान हैं। इनका समय विक्रम संवत् 1055 (ईस्वी 998) है। कवि डड्ढा आचार्य अमृतचन्द्र से प्रभावित थे। इसका आधार निम्नानुसार है—

डड्ढा ने अपने ग्रंथ पंचसंग्रह में आ. अमृतचंद्र के ग्रंथ के पद्य को अपने कथन के समर्थन में 'उक्तं च' रूप से प्रस्तुत किया है। आ. अमृतचंद्र ने लिखा है कि 'सोलह कषाय व नौ नोकषाय' कही गई है। इनमें जो किंचित् भेद है, वह नहीं गिना जाता है इसलिए दोनों मिलाकर पच्चीस कषाय कहलाती है। उनका मूल पद्य इस प्रकार है—

षोडशैव कषायाः स्युर्नोकषाया नवेरिताः।
ईषद्भेदो न भेदोऽत्र कषायाः पंचविंशतिः॥

आचार्य अमृतचंद्र के उक्त पद्य को डड्ढा ने अपने ग्रंथ पंचसंग्रह के प्रकृति-समुत्कीर्तन अधिकार में उद्धृत किया है। क्रमशः

..... पृष्ठ 26 का शेष

देशना में तो निमित्तरूप से सच्चे देव, शास्त्र, गुरु स्वाध्याय आदि होते हैं, परंतु देशना तभी कहलाएगी जब कोई जीव देशना का श्रवण करेगा, उसका ग्रहण करेगा अर्थात् समझेगा, उसे याद रखेगा अर्थात् धारणा में लेगा। यदि जो सुना वह समझ में ही नहीं आया तो कुछ कार्यकारी नहीं है। उसी प्रकार समझ में तो आया, परन्तु तत्काल विस्मरण भी हुआ तो क्या काम का? जो सुना, समझा उसे स्मरण में रखकर उस पर विचार करना, चिंतन-मनन करना और स्वयं युक्ति-न्याय से तर्क की कसौटी पर कसकर उन तत्त्वों की यथार्थता का निर्णय करना यही तो महत्त्व की बात है। निर्णय होने पर उस रूप परिणमन भी होता है। क्रमशः

"जिस प्रकार–उसी प्रकार" में छिपा रहस्य

जिस प्रकार– चार हाथ तक प्रकाश करने वाले छोटे दीपक को लेकर भी मीलों का रास्ता तय किया जा सकता है।

उसी प्रकार– कम शक्ति होने पर भी मोक्षमार्ग तय किया जा सकता है। शक्ति स्वयंमेव बढ़ती जाती है।

जिस प्रकार– लोक में किसी के वस्त्र अच्छे लगे तो उससे छीनते नहीं वरन् बनवा लेते है।

उसी प्रकार– यदि भगवान की परमात्मा दशा हमें अच्छी लगी हो तो हमें भी वैसे ही परमात्मा दशा प्रगट करने के लिए स्वभाव का आश्रय करना योग्य है।

जिस प्रकार– कोई शीलवती स्त्री निज पति को ही सर्वस्व समझती है, अन्य पुरूष होते हुए मानो उसके लिए है ही नहीं।

उसी प्रकार– स्वभाव में इतना समर्पण हो जाना चाहिए कि मानो पर्याय है ही नहीं अर्थात् शीलवती पर्याय को निज आत्मा ही स्वस्वामी स्वीकार हो उसी में मात्र रमणता हो तो आनन्द ही आनन्द है।

जिस प्रकार– बादलों की आड़ होने पर भी सूर्य तो ज्यों का त्यों है। मात्र स्थूल दृष्टि से दिखाई नहीं देता।

उसी प्रकार– रागादि की आड़ में शुद्धात्मा दिखाई नहीं देती। फिर भी अन्तदृष्टि से तुरन्त अनुभूति में आने योग्य है।

जिस प्रकार– कमल कीचड़ और पानी से पृथक ही रहता है।

उसी प्रकार– तेरा द्रव्य कर्म के बीच रहते हुए भी कर्म से भिन्न ही है। यह अतीतकाल में एकमेक नहीं था, वर्तमान में नहीं है और भविष्य में नहीं होगा। तेरे द्रव्य का एक भी गुण पर में मिल नहीं जाता।

जिस प्रकार– कोई राजमहल को पाकर फिर बाहर आये तो खेद होता है।

उसी प्रकार– सुखधाम आत्मा को प्राप्त करके बाहर आ जाने से खेद होता है। शान्ति और आनन्द का स्थान आत्मा ही है।

जिस प्रकार– आँख में किरकिरी नहीं समाती।

उसी प्रकार– विभाव का अंश हो तब तक स्वभाव की पूर्णता नहीं होती । अल्प संज्वलन कषाय भी है तब तक वीतरागता और केवलज्ञान नहीं होता।

जिस प्रकार– पतंग आकाश में उड़ाये बाहर जाता भी है तो दृष्टि की डोर चैतन्य में बांध कर रखना, उपयोग वापस आयेगा ही आयेगा।

उसी प्रकार– आर्य पुरूष को प्रयोजनवश अनार्य भाषा बोलने पर भी अनार्य नहीं हो जाना चाहिए।

क्रमशः **संकलन – स्व० प्रो० पुरुषोत्तमकुमार जैन, रुड़की**

समाचार-दर्शन

तीर्थधाम मङ्गलायतन द्वारा

दशलक्षण पर्व में धर्मप्रभावना

तीर्थधाम मङ्गलायतन में दसलक्षण पर्व के उपलक्ष्य में बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबहन, जयपुर; पंडित अरुण शास्त्री, जयपुर; मंगलार्थी शालीन जैन, बेंगलुरु एवं पण्डित समकित शास्त्री, मंगलायतन का लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम—जिनेन्द्र प्रक्षाल, पूजन एवं दसलक्षण विधान द्वारा प्रात:काल की मंगलमय शुरुआत हुई। आराधना के इसी क्रम में पूज्य गुरुदेवश्री की सीडी द्वारा छहढाला ग्रन्थ एवं पंडित अरुण शास्त्री द्वारा चौसठ ऋद्धि विषय का स्वाध्याय हुआ।

दोपहर में बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबहन द्वारा महान सिद्धांतग्रंथ श्री षटखंडागम (पुस्तक 16) की मंगलमयी वाचना हुई।

मंगलार्थी छात्रों के माध्यम से आध्यात्मिक पाठ एवं मंगलार्थी शालीन जैन द्वारा मङ्गलार्थियों के लिए जीव समास की उत्कृष्ट तकनीक के माध्यम से विभिन्न विषयों पर विशेष कक्षा का लाभ दिया गया। सायंकाल में मङ्गलार्थियों द्वारा दसलक्षण धर्मों पर स्वाध्याय हुआ। पश्चात् जिनेन्द्र भक्ति एवं क्षमापना द्वारा भावों में निर्मलता का प्रवाह हुआ। तत्पश्चात् पंडित अरुण शास्त्री जी के माध्यम से दसलक्षण धर्मों पर जीवनोपयोगी स्वाध्याय का समागम मिला तथा रात्रि में मङ्गलार्थियों द्वारा ज्ञानवर्धक एवं रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से तत्त्वज्ञान की अविरल धारा का आधुनिक रूप में पल्लवन किया गया।

बाहर से पधारे सभी साधर्मियों अतिथियों, परिवारिजन एवं मङ्गलार्थियों ने अपूर्व लाभ लिया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन मङ्गलार्थी अर्चित, समकित शास्त्री, मङ्गलायतन एवं समस्त मङ्गलार्थियों द्वारा किया गया।

मंगल आमंत्रण

तीर्थधाम चिदायतन : ऐतिहासिक पौराणिक नगरी विश्व धरोहर हस्तिनापुर की पावन धरा पर स्थित तीर्थधाम चिदायतन के भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव के मंगल आमन्त्रण का गूंजा मंगल गान, यह महामहोत्सव रविवार, 01 दिसम्बर 2024 से शुक्रवार, 06 दिसम्बर 2024 तक होने जा रहा है।

जिसकी मंगल सूचना और आमन्त्रण के लिए दशलक्षण के पुनीत अवसर पर तीर्थधाम मङ्गलायतन से पण्डित अशोक लुहाड़िया एवं पण्डित सुधीर जैन शास्त्री ने कोलकाता, अहमदाबाद, मुम्बई के विभिन्न स्थानों पर जाकर मंगल आमंत्रण दिया।

इसी शृंखला में डॉ. सचिन्द्र शास्त्री एवं पण्डित अंकुर शास्त्री मैनपुरी द्वारा भी उत्तरप्रदेश के विभिन्न स्थानों आगरा, फिरोजाबाद, शिकोहाबाद, जसवन्तनगर, इटावा, मैनपुरी, करहल, भोगाँव, जैतपुर, बाह, कुरावली और खतौली, खेकड़ा, बागपत, बड़ौत, सहारनपुर, शामली एवं मेरठ के विभिन्न स्थानों एवं मुमुक्षु मण्डलों में **तीर्थधाम चिदायतन के पंचकल्याणक महामहोत्सव का मङ्गल आमन्त्रण दिया गया।** सभी स्थानों पर साधर्मी भाई-बहिनों ने उत्साहपूर्वक आमन्त्रण स्वीकार किया एवं कार्यक्रम में पधारने की अपनी भावना भी व्यक्त की है।

अक्टूबर-नवम्बर 2024 माह के मुख्य जैन तिथि-पर्व

1 अक्टूबर – अश्विन कृष्ण 14 **चतुर्दशी**

2 अक्टूबर – अश्विन कृष्ण 15
महात्मा गाँधी जयंती

11 अक्टूबर – अश्विन शुक्ल 8 **अष्टमी**
श्री शीतलनाथ मोक्षकल्याणक

16 अक्टूबर – अश्विन शुक्ल 14
चतुर्दशी

18 अक्टूबर – कार्तिक कृष्ण 1
श्री अनंतनाथ गर्भकल्याणक

20 अक्टूबर – कार्तिक कृष्ण 4
श्री संभवनाथ ज्ञानकल्याणक

23 अक्टूबर – कार्तिक कृष्ण 7
पूज्य गुरुदेवश्री समाधि दिवस

24 अक्टूबर – कार्तिक कृष्ण 8 **अष्टमी**

27 अक्टूबर – कार्तिक कृष्ण 11
श्री श्रेयांसनाथ जन्मकल्याणक

30 अक्टूबर – कार्तिक कृष्ण 13
श्री पद्मप्रभ जन्म-तपकल्याणक

31 अक्टूबर – कार्तिक कृष्ण 14
चतुर्दशी

1 नवम्बर – कार्तिक कृष्ण 15
वीर निर्वाण महोत्सव
श्री महावीर मोक्षकल्याणक

3 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 2
श्री पुष्पदंत ज्ञानकल्याणक

7 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 6
श्री नेमिनाथ गर्भकल्याणक

8 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 7
अष्टाह्निका व्रत प्रारंभ

9 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 8 **अष्टमी**

13 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 12
श्री अरनाथ ज्ञानकल्याणक

14 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 13/14
चतुर्दशी

15 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 15
श्री संभवनाथ जन्मकल्याणक
अष्टाह्निका व्रत समागत

23 नवम्बर – मार्गशीर्ष कृष्ण 8 **अष्टमी**

25 नवम्बर – मार्गशीर्ष कृष्ण 10
श्री महावीर तपकल्याणक

29 नवम्बर – मार्गशीर्ष कृष्ण 14
चतुर्दशी

तीर्थधाम चिदायतन में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर

मूर्ति विराजमानकर्ता और भेंटकर्ता

श्री शान्तिनाथ चिदेश जिनालय

1. मूलनायक भगवान श्री शान्तिनाथ — श्री निमेषभाई शाह, श्री हितेनभाई शाह परिवार, मुम्बई;
2. भगवान श्री कुन्थुनाथ — श्री पण्डित जे.पी. दोशी, मुम्बई
   श्री कमलजी पाडलिया, परिवार, इंदौर
3. भगवान श्री अरनाथ — श्री अक्षयभाई दोशी, मुम्बई
4. भगवान श्री आदिनाथ — श्री अशोक पाटनी, सिंगापुर
5. भगवान श्री महावीर — श्री रजनीशजी परिवार, दिल्ली
6. विधिनायक भगवान श्री शान्तिनाथ —चिन्मय-चिद्रूप जैन, सहारनपुर

चौबीसी चिदेश जिनालय —

भगवान श्री शान्तिनाथ पूर्व दिशा — श्री अजितप्रसाद जैन परिवार, दिल्ली
भगवान श्री शान्तिनाथ पश्चिम दिशा — श्री किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका
भगवान श्री शान्तिनाथ उत्तर दिशा — श्री देवांग डगली परिवार, मुम्बई
भगवान श्री शान्तिनाथ दक्षिण दिशा — श्री रमेश भंडारी, बेंगलौर

चौबीसी भगवान

1. भगवान श्री आदिनाथ — श्री हीराज शाह, हिना शाह परिवार, कोलम्बस, (यूएसए) मोबा.
2. भगवान श्री अजितनाथ — श्री नीरज जैन, यूएसए
3. भगवान श्री संभवनाथ — श्री शान्तिलाल जैन परिवार, कोलकाता
4. भगवान श्री अभिनन्दन — भेंटकर्ता - श्री राजेन्द्र कुमार, अभिषेक कुमार जैन परिवार, मुम्बई
5. भगवान श्री अभिनन्दन — विराजमानकर्ता - श्री सुदीप जैन, गुड़गाँव
6. भगवान श्री सुमतिनाथ — श्री वीरसेन, देवेन्द्र, पारसकुमार, ग्वालियर
7. भगवान श्री पद्मप्रभ — श्री सुरेश मेहता परिवार, मुम्बई
8. भगवान श्री सुपार्श्वनाथ — श्री कीर्तिकुमार सी शाह परिवार
   —श्री ऋषभ नवरंगपुरा, अहमदाबाद
9. भगवान श्री चन्द्रप्रभ — श्री नरेन्द्र बड़जात्या परिवार, जयपुर
10. भगवान श्री पुष्पदन्त — श्री नरेन्द्र बड़जात्या परिवार, जयपुर

11. भगवान श्री शीतलनाथ — श्री नरेन्द्र बड़जात्या परिवार, जयपुर
12. भगवान श्री श्रेयांसनाथ — श्री प्रेमचन्द, अनिल जैन परिवार, पथरिया
13. भगवान श्री वासुपूज्य — भेंटकर्ता - रमणीकलाल दोशी, स्मिताबेन, निखिलभाई, सोनगढ़
14. भगवान श्री वासुपूज्य — विराजमानकर्ता - श्री धीरेन्द्र शाह, पूर्वी शाह परिवार मुम्बई
15. भगवान श्री विमलनाथ — श्रीमती मंजू जैन, गाजियाबाद
16. भगवान श्री अनंतनाथ — श्री मयंककुमार जैन, हाथरस
17. भगवान श्री धर्मनाथ — श्री अशोक, अर्पित, अरहन्त कैपिटल परिवार, इन्दौर
18. भगवान श्री शान्तिनाथ — श्री राजेशकुमार, संजयकुमार जैन परिवार, जबलपुर
19. भगवान श्री कुन्थुनाथ — श्री अनुराग जैन परिवार (नमकवाले), मेरठ
20. भगवान श्री अरनाथ — भेंटकर्ता - श्री सिद्धार्थप्रकाश शाहपरिवार, मुम्बई
21. भगवान श्री अरनाथ — विराजमानकर्ता - श्री अशोक, चक्रेश, सुशील जैन परिवार, कोलकाता
22. भगवान श्री मल्लिनाथ — श्री अम्बुज जैन-अतुल जैन परिवार, मेरठ
23. भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ — श्री नवनीत जैन परिवार, मेरठ
24. भगवान श्री नमिनाथ — भेंटकर्ता - श्री ऋषभकुमार सुशीलकुमार जैन, नोएडा
25. भगवान श्री नमिनाथ — विराजमानकर्ता- श्री विनय कुमार निकुंज कुमार जैन, मेरठ
26. भगवान श्री नेमिनाथ — श्री अश्विनीभाई हेमन्त शाह कोटडिया परिवार, अहमदाबाद
27. भगवान श्री पार्श्वनाथ — भेंटकर्ता - श्री एस. के. जैन, एसबीआई, आगरा
28. भगवान श्री पार्श्वनाथ — विराजमानकर्ता - श्री इन्द्रसेनजी परिवार, चाचा गारमेन्ट्स, दिल्ली
29. भगवान श्री महावीर — भेंटकर्ता - श्री नेमिचन्दजी बघेरवाल परिवार, भीलवाड़ा
30. भगवान श्री महावीर — विराजमानकर्ता-श्री प्रेमचन्द बजाज परिवार, कोटा

इन्द्रसभा

सौधर्म — श्री स्वप्निल जैन – प्रिया जैन
कुबेर — श्री अरहन्त चौधरी – दिव्या जैन, किशनगढ़
ब्रह्म — श्री अनाकुल जैन – अंजू जैन
लान्तव — श्री हार्दिक जैन – नेहा जैन, मुम्बई
शुक्र — श्री ध्रुव जैन – शिवानी जैन, अलीगढ़
शतार — श्री शगुन जैन – तृप्ति जैन, बुलन्दशहर
आनत — श्री हेतल-श्वेतल शाह, मुम्बई
प्राणत — श्री रवि जैन – रीता जैन, मुम्बई
आरण — श्री नयन जैन – वर्षा जैन, सिंगापुर

राजसभा

माता-पिता — श्री संजयकुमार जैन, श्रीमती मंजू जैन, जबलपुर
यज्ञनायक-नायिका — श्री अनिल जैन, श्रीमती अंजली जैन, पथरिया
महामन्त्री — श्री निजेश जैन, श्रीमती निधि जैन, सोनगढ़
राजा-रानी — श्री शान्तनु जैन, श्रीमती श्रुति जैन, ग्वालियर
राजा-रानी — श्री अभिषेक जैन, श्रीमती समीक्षा जैन, भरतपुर
राजा-रानी — श्री विभरल मोदी, श्रीमती करिश्मा जैन, ललितपुर
राजा-रानी — श्री निखिल जैन, श्रीमती रुचि जैन, मेरठ
राजा-रानी — श्री अंकित जैन, श्रीमती दीक्षा जैन, आरोन
राजा-रानी — श्री अनुभव जैन, श्रीमती जैन, पुणे
राजा-रानी — श्री एकत्व जैन, श्रीमती सुरभि जैन, खनियाधाना
राजा-रानी — श्री केविन शाह, श्रीमती भूमिका शाह, मुम्बई
राजा-रानी — श्री अनुभव जैन, श्रीमती निकिता जैन, जबलपुर
राजा-रानी — श्री हिमालय जैन, श्रीमती प्रियंका जैन, उदयपुर
छड़ीदार 1 — श्री अनवय जैन पिता श्री अभिषेक जैन, जबलपुर
छड़ीदार 2 — श्री अविरुद्ध जैन पिता श्री राहुल जैन, सनावद

तीर्थधाम चिदायतन में

श्री 1008 शान्तिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव

(रविवार, 1 दिसम्बर 2024 से शुक्रवार, 6 दिसम्बर 2024 तक)

मांगलिक कार्यक्रम

मार्गशीर्ष पूर्णिमा, रविवार, 1 दिसम्बर 2024

शुद्धता की रुचि, शुद्धता का स्मरण (गर्भकल्याणक से छह माह पूर्व)

मंगल प्रभात गीत, शांतिजाप, शोभायात्रा, ध्वजारोहण, मंगल कलश स्थापना, इन्द्र प्रतिष्ठा, यागमण्डल विधान, इन्द्रसभा, राजसभा, सोलह स्वप्न प्रदर्शन

मार्गशीर्ष एकम्, सोमवार, 2 दिसम्बर 2024

शुद्धता का श्रद्धान (गर्भकल्याणक)

माता जागरण, राजसभा, सपनों का फल, इन्द्रसभा, गर्भकल्याणक पूजा, घटयात्रा, बेदी शुद्धि, माता एवं अष्टदेवियों की तत्त्वचर्चा, मुक्ति सोपानम्

मार्गशीर्ष द्वितीया, मंगलवार, 3 दिसम्बर 2024

शुद्धता का उद्गम (जन्मकल्याणक)

इन्द्रसभा, राजसभा, जन्मकल्याणक शोभायात्रा, जन्माभिषेक, जन्मकल्याणक पूजन, सौधर्म इन्द्र द्वारा तांडव नृत्य, पालना झूलन, राजाओं द्वारा भेंट

मार्गशीर्ष तृतीया, बुधवार, 4 दिसम्बर 2024

शुद्धता का आरोहण (दीक्षाकल्याणक)

इन्द्रसभा, राजसभा, वैभव से वैराग्य, बारह भव दर्शन, वनगमन, शांतिकुमार की दीक्षाविधि, तपकल्याणक पूजन, जिनशासन की महाभारत

मार्गशीर्ष चतुर्थी, गुरुवार, 5 दिसम्बर 2024

शुद्धता की पूर्णता (ज्ञानकल्याणक)

मुनिराज शांतिनाथ की आहारविधि, वनगमन, समवसरण रचना, केवलज्ञानकल्याणक पूजन, दिव्यध्वनि प्रसारण

मार्गशीर्ष पंचमी, शुक्रवार, 6 दिसम्बर 2024

शुद्धता ही शुद्धता (मोक्षकल्याणक)

श्री सम्मेदशिखरजी रचना, श्री निर्वाणकल्याणक महोत्सव, श्री जिनेन्द्र श्शोभायात्रा, जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा, तीर्थधाम चिदायतन ध्वजारोहण, कलशारोहण

तीर्थधाम चिदायतन, हस्तिनापुर में

श्री 1008 शान्तिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव

(रविवार, 1 दिसम्बर से शुक्रवार, 6 दिसम्बर 2024)

मङ्गल आमन्त्रण

आदरणीय सत्धर्म प्रेमी साधर्मीजन,

सादर जयजिनेन्द्र !

समस्त जिनधर्मभक्तों को जानकर हर्ष होगा कि परमोपकारी वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु की अनुकम्पा से, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के पुण्य प्रभावनायोग में, अखिल विश्व की आश्चर्यकारी, परमपवित्र तपोभूमि-हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, **तीर्थधाम चिदायतन** का अवतरण हो रहा है।

हस्तिनापुर वह गौरवशाली ऐतिहासिक एवं पौराणिकनगरी है, जहाँ पर तीन-तीन तीर्थंकरों (भगवान शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ एवं अरनाथ) के चार-चार कल्याणक सम्पन्न हुए हैं। साथ ही यह पौराणिक स्थल भगवान मल्लिनाथ के समवसरण, भगवान आदिनाथ के प्रथम आहारदान तथा विष्णुकुमार के द्वारा अकम्पनाचार्य आदि सात सौ मुनिराज पर हुए उपसर्ग निवारण का साक्षी रहा है। यह नगरी, जैन महाभारत के महानायक पाण्डवों एवं कौरवों की प्रसिद्ध राजधानी रही है। प्रतिवर्ष धर्मनगरी हस्तिनापुर में विश्व के अलग-अलग कोनों से लाखों की संख्या में दर्शनार्थी पधारते हैं।

इस संकुल के सम्बन्ध में देश के ख्यातिप्राप्त विद्वानों, श्रेष्ठियों एवं साधर्मियों ने अपनी हार्दिक अनुमोदना प्रदान कर हमारा उत्साहवर्धन किया है।

इस महान धार्मिक प्रकल्प **तीर्थधाम चिदायतन** में भगवान श्री शान्तिनाथ चिदेश जिनालय; श्री चौबीसी चिदेश जिनालय का भव्य **पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव रविवार, 1 दिसम्बर से शुक्रवार, 6 दिसम्बर 2024** तक होना निश्चित हुआ है। आप सब इस महामहोत्सव में सादर आमन्त्रित हैं।

आइये, तीर्थधाम चिदायतन संकुल निर्माण की अनुमोदना एवं हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र के दर्शन कर अपना जीवन धन्य करें।

——: सम्पर्कसूत्र :——

पण्डित सुधीर शास्त्री, मोबा. 97566 33800

श्री नवनीत जैन, नोएडा, मोबा. 8171012049

Regn. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2024-26

आवास पंजीकरण हेतु QR कोड

ऐतिहासिक अतिशयकारी पौराणिक तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर की पुण्य धरा पर
श्री शान्तिनाथ-अकम्पन-कहान- दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हस्तिनापुर द्वारा **तीर्थधाम चिदायतन** में

श्री 1008 शान्तिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महा-महोत्सव

रविवार 1 दिसम्बर 2024 से शुक्रवार 6 दिसम्बर 2024 तक

मंगल सूचना

इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महा-महोत्सव में पधारने वाले सभी साधर्मियों (जिन्हें आवास की आवश्यकता है अथवा जिन्हें आवास की आवश्यकता नहीं है) से विनम्र अनुरोध है कि आप आवास रजिस्ट्रेशन पोर्टल को अवश्य भरें, जिससे आपके रहने की उचित व्यवस्था की जा सके। हमें आशा है कि आप इस व्यवस्था में पूर्ण सहयोग करेंगे एवं इस पोर्टल पर अपने साथ-साथ अन्य साधर्मीजनों को पंजीकृत कर धर्मलाभ हेतु अपनी सहभागिता सुनिश्चित करेंगे।

आवास हेतु QR कोड

आवास रजिस्ट्रेशन लिंक : awas.chidayatan.com | **आवास हेल्पलाइन नं:** +91 80064 09338

सम्पर्क सूत्र: **तीर्थधाम चिदायतन**, दूसरी नसियां से आगे, हस्तिनापुर, मेरठ - 250404 (उ.प्र.)
info@chidayatan.com | www.CHIDAYATAN.com

पं. सं. : DELBIL/2001/4685

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक स्वप्निल जैन द्वारा **मङ्गलायतन** मुद्रणालय, आगरा रोड, अलीगढ़-202001 छपवाकर, 'विमलांचल', हरिनगर, अलीगढ़-202001 से प्रकाशित। **सम्पादक :** डॉ. जयन्तीलाल जैन,मङ्गलायतन वि०वि०

If undelivered please return to -

मङ्गलायतन
श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हरिनगर, आगरारोड, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)
Shri Adinath-Kundkund-Kahan Digamber Jain Trust
Harinagar, Agra Road, Aligarh-202001 (U.P.)
Ph. : 9997996346, 2410010/10; Fax : 2410019/22
info@mangalayatan.com www.mangalayatan.com